

नैतिक शिक्षा



नैतिक शिक्षा

आजकल, हम विद्यालयों से अपेक्षा करते हैं कि वे बच्चों के सर्वांगीण विकास में उनकी सहायता करें। शैक्षणिक और खेलों में उत्कृष्टता से लेकर उनके व्यक्तित्व निखारने तक: शिक्षकों से बच्चों की मदद की अपेक्षा की जाती है। नैतिक शिक्षा, शिक्षा के समग्र दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण घटक है।

नैतिक शिक्षा क्या है?

नैतिक शिक्षा से तात्पर्य मनुष्य के समग्र चारित्रिक विकास से है। यह हमारे व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित है, जैसे:

- शारीरिक
- भावात्मक
- सामाजिक
- आध्यात्मिक



Source:

<https://gracesalt.wordpress.com/2015/07/03/physical-emotional-social-spiritual-scale/>

सी.वी. गुड के अनुसार, "नैतिक-शिक्षा उन सभी प्रक्रियाओं का संग्रह है जिसके माध्यम से व्यक्ति उस समाज में योग्यता, दृष्टिकोण और सकारात्मक मूल्यों के आचरण के अन्य रूपों को विकसित करता है, जिसमें वह रहता है।"

बच्चें सामान्यतया नैतिक शिक्षा वयस्कों से ग्रहण करते हैं। माता-पिता, शिक्षक और समुदाय के वरिष्ठ सदस्य सभी, बच्चों को नैतिकता का पाठ पढ़ाने के लिए उत्तरदायी हैं। कुछ सामान्य स्थान जहाँ से नैतिक शिक्षा प्राप्त होती है:

- घर

- पड़ोस
- विद्यालय या विश्वविद्यालय
- धार्मिक संगठन
- युवा संगठन या क्लब

इस प्रकार, ऐसा ज्ञान अक्सर सामाजिक या सांस्कृतिक झुकाव को उत्पन्न कर सकता है। विभिन्न समुदायों के आधार पर मान्यताएं अलग-अलग होती हैं, जो इनके सदस्यों के द्वारा मानी जाती हैं।

नैतिकता का वर्गीकरण

तदनुसार, मूल्यों को व्यक्तियों को प्रभावित करने के साथ ही वे अपने आसपास किस तरह से व्यवहार करते हैं, इस आधार पर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। वे हैं:

1) व्यक्तिगत मूल्य

ये वे मूल्य हैं जो मुख्य रूप से व्यक्तिगत रूप से आपसे संबंधित होते हैं। ये आपके रोजमर्रा के दृष्टिकोण, विश्वासों और कार्यों को नियंत्रित करते हैं।

उदाहरण: ईमानदारी, उत्तरदायित्व, ईमानदारी



Source: <https://www.pinterest.com/pin/804103708439148445/>

2) सामाजिक मूल्य

ये समाज के अन्य सदस्यों के साथ आपके व्यवहार और दृष्टिकोण को निर्धारित करते हैं। यह अन्य लोगों के अधिकारों के साथ-साथ उनके प्रति आपके कर्तव्यों से सम्बन्धित है। सामाजिक मूल्य अक्सर कम उम्र में सीखे जाते हैं। उन्हें समाजीकरण के माध्यम से भी सीखा जा सकता है।

उदाहरण: स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा

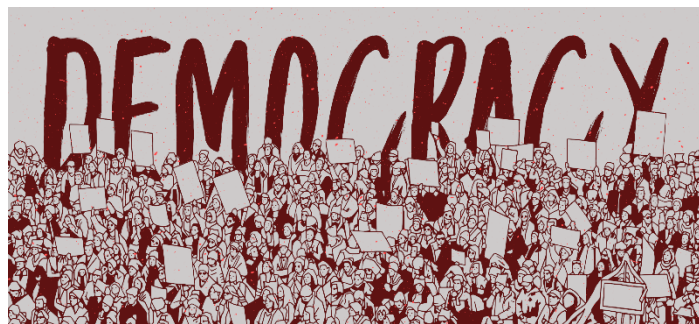


Source: <https://www.drapazur.com/pavoisement-ecoles/devise-de-la-republique.html>

3) राजनीतिक मूल्य

ये मान्यताएं किसी देश के संचालन से सम्बन्धित हैं। इन मूल्यों को शिक्षा और राजनीति की समझ के माध्यम से **बाद में** सीखा जाता है। किसी देश या लोगों के समूह पर शासन करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है, इस बारे में लोगों के मत अलग-अलग हैं।

उदाहरण: लोकतंत्र, कल्याण,
धर्मनिरपेक्षता



Source:

<https://medium.com/wordsthatmatter/voting-for-democracy-dcac09090b8a>

4) आर्थिक मूल्य

यह आर्थिक, धन, वित्तीय बाजार, संपत्ति स्वामित्व और श्रम कानूनों से सम्बन्धित हैं।

5) धार्मिक मूल्य

धर्म व्यक्तिगत होने के साथ-साथ एक समुदाय की पहचान करने में आपकी मदद करने वाला हो सकता है। सामुदायिक भावनाएँ अक्सर धार्मिक मूल्यों को मजबूती से व्यक्ति के जीवन का केंद्र बनाती हैं। ये मूल्य, कोई व्यक्ति कैसे प्रार्थना करता है, लोग कौन-से त्यौहार मनाते हैं और यहां तक कि वे जो कपड़े पहनते हैं और जिस तरह से वे रहते हैं, सब नियंत्रित करते हैं।

नैतिक शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण

1) स्पष्ट नैतिक शिक्षा

यह शिक्षकों के द्वारा विभिन्न पद्धतियों और अध्यापन-कला के माध्यम से दिए गए मूल्यों और विचारों से सम्बन्धित है। इस मामले में, व्यक्ति बाहरी स्रोत जैसे शिक्षक से मूल्यों के बारे में सीखता है।

2) अंतर्निहित नैतिक शिक्षा

मूल्यों को जीवंत अनुभवों और व्यक्तिगत विवेचनाओं से भी प्राप्त किया जा सकता है। प्रकृति में निहित शिक्षा, व्यक्ति द्वारा अविरत प्रयासों से समझी गई है। ऐसा माना जाता है कि इसमें एक "अप्रत्यक्ष पाठ्यक्रम" शामिल है।

नैतिक शिक्षा के उद्देश्य

- बच्चे के समग्र विकास में सहायता के लिए व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को विकसित करना
- अच्छे व्यवहार के लिए प्रेरित करना
- लोकतांत्रिक विचारों और व्यवहारों को प्रोत्साहित करना और एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में कार्य करना
- समाज के अन्य सदस्यों के लिए सहयोग और सम्मान की भावना को प्रोत्साहित करना
- अन्य समुदायों और सामाजिक समूहों के प्रति सहिष्णुता विकसित करना
- नैतिक सिद्धांतों के आधार पर निर्णय लेने में सक्षम बनाना
- बच्चों को स्वयं पर विश्वास करना और उच्च क्षमता के लिए प्रोत्साहित करना जो बच्चों का सही मार्गदर्शन कर सके

- नैतिक शिक्षा के विभिन्न स्रोतों का पता लगाना
- इसके अलावा नैतिक शिक्षा का प्रसार करना और इसके बेहतर उपयोग के लिए सुझाव देना

नैतिक शिक्षा शिक्षण की विधियाँ

शिक्षक छात्रों को इन दो में से एक तरीके से मूल्यों को समझा सकते हैं:

1) प्रत्यक्ष विधि

इसमें छात्रों को मूल्यों के बारे में पारंपरिक कक्षा शिक्षण विधियों के माध्यम से पढ़ाना शामिल है। नैतिक शिक्षा छात्रों के पाठ्यक्रम का एक भाग भी हो सकती है। शिक्षक वास्तविक जीवन के उदाहरणों और कहानियों से नैतिक औचित्य के महत्व पर बल दे सकते हैं।

2) अप्रत्यक्ष विधि

नैतिक शिक्षा को लागू करने के लिए विशेष समय निर्धारण और पाठ्यक्रम का भाग होने की आवश्यकता नहीं है। इन विचारों को मौजूदा पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के एक भाग के रूप में स्पष्ट किया जा सकता है।

नैतिक शिक्षा की आवश्यकता

नैतिक शिक्षा के संबंध में तेज़ी से अनुसंधान किए जा रहे हैं। हालांकि, वास्तव में नैतिक शिक्षा के बारे में विभिन्न राय हैं और सर्वसम्मति से इसकी तत्काल आवश्यकता है। यहां कुछ कारण दिए गए हैं जो इसे वर्तमान में विश्व में अत्यधिक महत्वपूर्ण बनाते हैं:

- समाज की प्रगति के लिए एक नैतिक दृष्टिकोण आवश्यक है
- सर्वनिष्ठ मूल्यों की पहचान व्यक्तियों को एकजुट करने में मदद करेगी और उन्हें सर्वनिष्ठ लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करेगी
- यह निर्णय सृजन प्रक्रम को आसान बना सकती है
- यह कम संघर्षों और विभाजनकारी ताकतों के साथ अधिक न्यायपूर्ण और समतावादी समाज के निर्माण में मदद करेगी
- राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समाज में शांति और सद्भाव सुनिश्चित करने के लिए नैतिक शिक्षा महत्वपूर्ण हो सकती है

नैतिक शिक्षा में मुख्य विकास:

- 1) राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952- 1953): चरित्र निर्माण को मुख्य लक्ष्य के रूप में बल दिया
- 2) विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1962): शिक्षा प्रणाली के समग्र विकास के लिए आध्यात्मिक प्रशिक्षण पर बल दिया।
- 3) भारत का शिक्षा आयोग (1964-1965): शिक्षा और राष्ट्रीय विकास पर ध्यान केंद्रित किया। श्री प्रकाश समिति की रिपोर्ट 1959 से सहमत, विद्यालय शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा के एक या दो पीरियड होने चाहिए।
- 4) NPE/एनपीई (1986): सामाजिक और नैतिक मूल्यों के एक उपकरण के रूप में शिक्षा में परिवर्तन का समर्थन किया। इसे देश की एकता और अखंडता के परिणामस्वरूप सार्वभौमिक और शाश्वत मूल्यों को बढ़ावा देना चाहिए।
- 5) चव्हाण समिति रिपोर्ट (1999): शिक्षा में नैतिक शिक्षा को विकसित करने के लिए किया गया कार्य।
- 6) स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2000): स्कूलों में नैतिक शिक्षा।
- 7) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005): शिक्षा प्रणाली में विविधता में एकता आदि की अवधारणाओं को शामिल करने की जरूरत।

भारत में नैतिक शिक्षा

प्राचीन काल से, नैतिक शिक्षा भारतीय शिक्षा प्रणाली के केंद्र में रही है। छात्रों को गुरुकुलों में भी मूल्यों और नैतिकता के बारे में पढ़ाया जाता था। इसके बाद, खासकर ब्रिटिश शासन के दौरान इसका महत्व कम हो गया। हालाँकि, वर्तमान में यह बच्चे के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

अधिकांश शिक्षाविदों और विशेषज्ञों को लगता है कि प्राकृतिक विज्ञान के छात्रों को भी एक स्तर तक सामाजिक विज्ञान की समझ होनी चाहिए। ऐसा इसलिए क्योंकि स्वतंत्र कला बच्चों को मूल्यों से अवगत कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विश्वविद्यालय स्तर पर भी, छात्रों को अनिवार्य रूप से संचार कौशल या पर्यावरण विज्ञान जैसे नैतिक शिक्षा से संबंधित विषयों का अध्ययन करने की आवश्यकता है।

सरकार ने योजना आयोग के कोर ग्रुप ऑफ वैल्यू ओरिएंटेशन ऑफ एजुकेशन के तहत एक स्थायी समिति का गठन किया। समिति को विभिन्न स्तरों पर मूल्य-उन्मुख शिक्षा को प्रोत्साहित और समन्वित करने का कार्य सौंपा गया था।

मूल्य आधारित पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण शिक्षा की प्रकृति भी नैतिक हो सकती है। इसके विभिन्न तरीके हैं:

- यह विकास के एक सतत मॉडल को प्रोत्साहित करने में मदद करता है
- यह अन्य जीवों के प्रति एक बुनियादी समझ और संवेदनशीलता का निर्माण करता है
- धार्मिक मूल्य भी पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दे सकते हैं
- ऐसा विचार है कि मनुष्य को प्रकृति के साथ मिलकर रहना चाहिए और इसकी समरसता से छेड़छाड़ से विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं।
- इच्छाओं को कम करना और आत्म-संयम जैसे कुछ महत्वपूर्ण मूल्य हैं जो पर्यावरण संरक्षण में मदद कर सकते हैं

इस प्रकार, नैतिक शिक्षा न केवल व्यक्ति के लिए बल्कि समाज और पूरे विश्व के लिए महत्वपूर्ण है। इस शिक्षा को आगे बढ़ाने में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि वे नैतिक शिक्षा प्राथमिकता हो और इसे सफलतापूर्वक लागू करने के लिए सुझाए गए सभी उपायों को अपनाया जाए। खासकर इसलिए कि किसी भी तरह की लापरवाही पूरे समाज के लिए हानिकारक साबित हो सकती है।

Value Education

Nowadays, we expect schools to help children in their all-around development. From excelling in academics and sports to cultivating their personalities: teachers are expected to help children in all of it. Value education is an important component of this holistic approach to education.

What Is Value Education?

Value education refers to the overall development of a human being's character. It caters to various aspects of our personality, such as:

- Physical
- Emotional
- Social
- Spiritual



Source: <https://gracesalt.wordpress.com/2015/07/03/physical-emotional-social-spiritual-scale/>

According to C.V. Good, “Value-education is the aggregate of all the processes by means of which a person develops abilities, attitudes and other forms of behaviour of the positive values in the society in which he lives.”

Children are usually assisted by adults in gaining value education. Parents, teachers, and older members of their community, are all responsible for imparting value to children. Some of the most common places where value education may occur are:

- Home
- Neighbourhood
- School or university
- Religious organisation
- Youth organisation or club

Thus, this type of knowledge may often carry a social or cultural bias. Values also differ from community to community depending upon what its members consider desirable.

Categorisation OF Values

Accordingly, values can be divided into different categories depending upon how they affect individuals as well as how they interact with others around them. They are:

1) Personal values These are those values which mainly concern you as an individual being. They govern your everyday attitudes, beliefs and actions.

Examples: honesty, responsibility, sincerity



Source: <https://www.pinterest.com/pin/804103708439148445/>

2. Social values

These govern how you interact with and view other members of the society. It includes concerning yourself with the rights of other people as well as your duties towards them. Social values are often instilled at a young age. They can also be instilled through socialisation.

Examples: liberty, equality, brotherhood

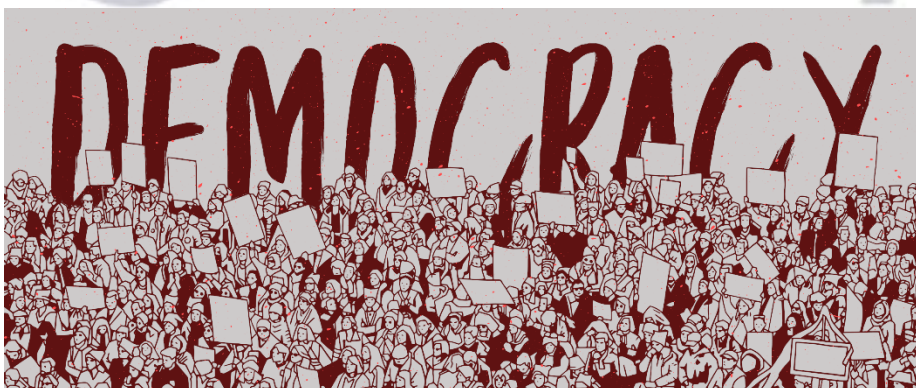
Source: <https://www.drapazur.com/pavoisement-ecoles/devise-de-la-republique.html>



3) Political values

These are beliefs regarding how a country should be governed. These values are learnt at a later age through education and an understanding of politics. People have different opinions about what is the best way to govern a country or any group of people.

Examples: democracy, welfare, secularism



Source: <https://medium.com/wordsthatmatter/voting-for-democracy-dcac09090b8a>

4) Economic values

They concern everything economic, including money, financial markets, ownership of property and labour laws.

5) Religious values

Religion can be personal as well as something that helps you identify with a community. Community feelings are often very strong making religious values central to a person's life. These values govern how a person prays, what festivals they celebrate and even the clothes they wear and the way they live.

Approaches to Value Education

1) Explicit value education

This refers to the values and ideas that are imparted by teachers through different methods and pedagogies. In this case, the individual learns about values from an external source such as the teacher.

2) Implicit value education

Values can also be learnt through lived experiences and personal interpretations. Education which is implicit in nature is inculcated by the individual. It is believed to involve a "hidden curriculum".

Objectives of Value Education

- Develop all aspects of a child's personality that would help his/her overall growth
- Inspire good behaviour
- Encourage democratic thoughts and practices and acting as a responsible citizen
- Inculcate the spirit of cooperation and respect for other members of the society
- Develop tolerance towards other communities and social groups

- Enable decision making on the basis of moral principles
- Allow children to find faith in themselves and a higher power which would guide them in the right direction
- Identify the various sources of value education
- Further the propagation of value education and suggest ideas that can allow it to be utilised better

Methods of Teaching Value Education

Teachers can introduce students to values in one of two ways:

1) Direct method

This involves teaching students about values through traditional classroom teaching methods. Value education may even be a part of the students' curriculum. Teachers can emphasise upon the importance of values through real-life examples and stories that highlight moral uprightness.

2) Indirect method

There is no need for specially demarcating time and a part of the syllabus for implementing value education. These ideas can instead be highlighted as a part of the existing curriculum and co-curricular activities.

Need for Value Education

There is a growing body of research around value education. Although there are various opinions about what actually constitutes value education, there is common consensus regarding its urgent need. Here are some reasons which make it absolutely essential in today's world:

- A moral approach is essential for the progress of society
- Identification of common values would help in uniting individuals and allow them to pursue common goals
- It can often ease the process of decision making

- It would help build a more just and egalitarian society with fewer conflicts and divisive forces
- Value education can be instrumental in ensuring peace and harmony at the society, national as well as international levels

Key Developments in Value Education:

- 1) National commission of Secondary Education (1952- 1953): Emphasized character building as main aim.
- 2) University Education Commission (1962): Emphasised on the spiritual training for the overall development of the education system.
- 3) Education Commission of India (1964-1965): focussed on education and national development. Agreed with the Sri Prakasa committee report 1959, recommending one or two periods of moral science should be kept in the school education system.
- 4) NPE (1986): Advocated turning education into a tool for social and moral values. It should foster universal and eternal values resulting into unity and integration of the country.
- 5) Chavan's Committee report (1999): Provided work for inculcating value education into education.
- 6) The National Curriculum framework for school Education (2000) : value education into schools.
- 7) National Curriculum framework (2005): Need for incorporating concepts like unity in diversity etc into education system.

Value Education in India

Since ancient times, value education has been central to the Indian education system. Students were taught about values and morality even in gurukuls. Thereafter, there was a decline in its importance, especially under the British rule. However, today it is considered crucial for a child's overall development.

Most academicians and experts feel that even students of the natural sciences should have some level of understanding of the social sciences. This is because liberal arts play an important role in introducing children to values. Even at the university level, students are compulsorily required to study subjects concerning value education like communication skills or environmental science.

The government even formed a Standing Committee under the Planning Commission's Core Group on Value Orientation of Education. The body was assigned the role of promoting and coordinating value-oriented education at various levels.

Value Based Environmental Education

Environmental education can also be moral in nature. There are various ways in which this happens:

- It helps to promote a sustainable model of development
- It builds a basic understanding of and sensitivity towards other organisms
- Religious values may also promote the conservation of the environment
- It asserts the idea that human beings must live in harmony with nature and disturbing this harmony can lead to catastrophic results
- Reducing wants and self-restraint are some important values that can help conserve the environment

Thus, value education is important to not only the individual but also the society and the world as a whole. Teachers play a crucial role in how this kind of education is carried out. So it is necessary that they make value education a priority and employ all the suggested measures to implement it successfully. Especially because any negligence on their part may prove to be detrimental for the whole society.